साहित्य सुगंध

संपादक

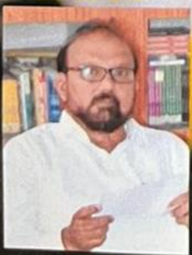

डॉ. महेर अफ़ज़ल एम जहागीरदार

सह संपादिका

अलूरि कामेश्वरी

इस साझा पुस्तक के प्रकाशन के बाद तत्संबंधित किसी भी प्रकार का विवाद या आलोचना उठती है तो उक्त रचना के रचनाकार कानूनी कार्यवाही के लिए उत्तरदायी होंगे। पुस्तक में संकलित रचना के सर्वाधिकार रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। उनकी लिखित अनुमति के बिना किसी भी अंश की फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित, प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण : 2022

सामग्री कॉपीराइट : संबंधित रचना के रचनाकार स्वयं
पुस्तक कॉपीराइट : गीता प्रकाशन

प्रकाशक : गीता प्रकाशन
4-2-771, रामकोट चौरस्ता,
हैदराबाद 500001 तेलंगाना भारत
सेल : 9849250784
geetaprakashan7@gmail.com

ISBN : 978-93-91934-42-2

Sahitya Sugandh

collection of Writings in
Hindi, Telugu & English

बंजारा लोकगीतों में धार्मिक जन–जीवन

- डॉ. ए. बाबू

शोध सारांश

साहित्य समाज का प्रतिबिंब है। इस प्रतिबिंब में समाज के प्रत्येक रूप का दर्शन हो जाता है। लोकगीत परंपरा अति प्राचीन काल से चली आ रही है। इस लोकगीतों में धरातलीय अभिव्यक्ति मिलती है। धर्म देवी देवता, पर्व सभ्यता संस्कृति लोकगीतों का आधार होता है। बंजारा लोकगीत भी इन्हीं परंपरा का निर्वाह करते हुए चलती है। बंजारा लोकगीतों का आधार बंजारा समाज के देवी देवता एवं उनके धार्मिक स्थल हैं। अपने देवी देवता एवं धर्म के प्रति यह बंजारा समाज आस्था प्रकट करते हुए अपने को निर्बल एवं धार्मिक देवताओं को सबल बताते हुए गीतों की रचना करते आ रहा है।

बंजारा समाज की लोकगीत परंपरा में देवी देवताओं का स्थान सर्वोपरि है। समाज की सभी गतिविधि पर अपने देवी देवताओं गुहराकट ही शुभ कार्य का आरंभ करते हैं। इस समाज की धार्मिक शक्ति मातृ सत्ता की ओर ज्यादा दिखाई देता है। इसी लिए कदम–कदम पर देवियों की पूजा आराधना करते हैं तथा बकरे मुर्गे की बली देकर देवियों की पूजा की जाती है। देवियों के साथ–साथ बंजारा समाज के संतों का समाज पर विशेष प्रभाव है, सेवा भाया, हाथीराम, सेविया साद तथा ईश्वरसिंह धार्मिक संत गुरु हैं। इन्हीं गुरुओं की समाधि स्थल इनके धार्मिक स्थान हैं। इन सबके साथ–साथ बंजारा समाज हिन्दू धर्म के अत्यधिक निकट रहा है। जिसके कारण इसके जीवन पर हिन्दू धार्मिक देवताओं की भी छाप पड़ी है। अपनी धार्मिक गीतों पर राम, कृष्ण, शिव, हनुमान की भक्ति भावना भी देखने को मिलती है

बीज शब्द

बंजारा, लोकगीत, सामाजिक, धार्मिक, टांडा, मारियामा, याडी, हिंगला, तोलजा, सीतला, ओरी, मसाई, अभिव्यक्ति आदि।

मूल शोध

धर्म किसी भी समाज को उन्नति के मार्ग की ओर अग्रसर करने का

सशक्त मार्ग है। धर्म की स्थापना समाज को सुचारु रूप से संचालन के लिए हुआ है। धर्म एक ऐसी इकाई है जो अपने अंदर समस्त समाज की एकता को बनाए हुए चलता है। भक्ति भावना प्रत्येक मनुष्य का लोक कल्याणकारी भावना को दर्शाता है। बंजारा समाज का संपूर्ण जीवन ही कर्मकांडों में अझुराया नजर आता है। यह कर्मकाण्ड इनको धर्म प्रदान करता है। वैसे तो यह समाज हिन्दू धर्म के काफी नजदीक है लेकिन इसके अलावा भी इसके अपने पारंपरिक देवी देवता हैं। जिनका सुमिरन अपने सलामती के लिए हर समय करते ही रहते हैं। हारी–बीमारी में अपने इन्हीं पारंपरिक देवी देवताओं का सुमिरन करते हुए नजर आते हैं। वैसे बंजारा समाज पूर्णतः मातृसत्ता का उपासक है इसी कारण देवियों की आराधना इनके गीतों में विशेष रूप से दिखाई देती हैं। देवियों के अलावा इनके समाज के संत महापुरुष भी हुए। यहीं संतों की देहरी बंजारे समाज की धार्मिक स्थली बनी। इसके अलावा हिन्दू धर्म के देवता इनके धार्मिक पूजमान हैं जो इनके गीतों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

बंजारा गीतों में मारियामा देवी (जगदंबा देवी)

बंजारा समाज के देवी देवता भारतीय देवी देवताओं के साथ ही पूजे जाते हैं। बंजारा समाज की प्रधान पूज्यमान धार्मिक देवी मारिया देवी हैं। भारतीय बंजारा समाज मारिया देवी को दिव्य शक्ति के रूप में उपासना करता है। इसके संदर्भ में प्रो. मोतीराज राठोड़ लिखते हैं– "गोर वंशीय लोक इस देवी के मन्यामा कहकर आज भी भक्ति करते हैं। बाघ पर सवार होने वाली भाला, बरघी और तलवार धारण करने वाली सुनहरे केशों वाली यह देवी हैं।" [1] बंजारा समाज की शक्ति रुपेण देवी मॉ मारिया अपने भक्तों की संकट हरने बाघ पर सवार होकर टांडे में प्रवेश करती हैं और कल्याण कर चली जाती हैं। देवी को प्रसन्न करने के लिए बंजारा भक्त समाज पकवान की थाली चढ़ाता है। देवी की स्तुति में पूरा बंजारा समाज करजोड़ मनुष्य विनय करता है और गीत गाता है देवी माता को गोहराता है

"खीर कडई भायान देति
खीर कडई भायान देति
हाजर बकरा लेती
ग्वारुरो साई वेति
सई ये मेरामा मई
तार सेवा भाया अवतारी
पूरिये मेरामा माईतार

सुखा भाया पूजारी.....राम।" [2]

बंजारा समाज के कुल की रक्षक देवी मारियामा के प्रति बंजारा समाज की अटूट श्रद्धा है। इस लिए देवी को प्रसन्न करने के लिए बकरे की बली दी जाती है। बंजारा लोकगीतों में देवी देवताओं के अपार भक्तिभावना दर्शित होता है। जहां माँ मारियामा के सामने बंजारा भक्त परिवार एक पैर पर खड़े होकर अपनी हारी बीमारी के लिए कुशल क्षेत्र की अर्जी लगाते हैं।

बंजारा समाज के अंदर मारियामा देवी की भक्ति के पीछे कई दंत कथाएं देखने को मिलती हैं। यही दंत कथाएं बंजारा समाज की भक्ति को और मजबूत सांचे में ढालती चली जाती हैं। मारियामा के प्रति अपार श्रद्धा भाव उत्पन्न होता है। यह दंत कथाएं संपूर्ण बंजारे समाज के टांडो में घूमती रहती हैं। इसी बंजारा समाज के बूढ़े बुजुर्ग बताते हैं कि एक बार हैदराबाद का शासक बंजारा समाज के प्रतिष्ठित पुरुष सेवा लाल की गायों के ऊपर कर लगा दिया जब सेवालाल ने कर चुकाने से मना किया तो उनकी समस्त गायों को हकवा लिया।

अपनी विवशता पर सेवा लाल ने माँ मारियामा की गुहार लगाई जिससे देवी अपने भक्त की फुकार सुनकर हैजा नामक बीमारी पूरे नगर में फैला दी। जैसे ही शासक को पता चला कि गायों को हकवाने के संदर्भ में देवी मारियामा नाराज होकर हैजा की बीमारी फैला दी हैं तो बादशाह ने सभी गायों को वापस लौटा दिया। इस प्रकार भक्ति में बंजारा समाज गीत गाता है

"मारयामा देवी रीसेम भरारी
हैदराबादेन काँलरा फेलारी
येरो कारण भायान मालम
बादशायान विचार पडन" [3]

बंजारा समाज के हृदय में जगदंबा मारियामा के लिए अपार स्नेह के साथ डर भी फैला रहता है कि कहीं देवी नाराज ना हो जाएं इसलिए देवी को हर उपक्रम करके प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता है, ताकि देवी बंजारा समाज की रक्षा करती रहें। इसके पास भले स्वयं के लिए भरन–पोषण का अभाव हो लेकिन देवी माता के भरन के लिए उपाय जरूर करता है। माता मारियामा को प्रसन्न करने के लिए बंजारा समाज के कंठ से देवी के लिए गीत फुट पड़ता है।

"जे जे मारयामा याडी साहेबळी
आयो इगन दूर कर, चितो काम फतो कर
जीव जंतून साई व्हेस, बालबच्यान साई व्हेस

चूंकि भुली माफ कर याडी," [4]

बंजारा समाज का जिक्र भ्रमणशील रहा है। भ्रमणशीलता ही इस समाज की रोजी रोटी का सहारा है।. जहां–जहां यह बंजारा समाज गया अपनी सभ्यतां संस्कृति अपने रोड के साथ लेकर चलता गया है। इस संदर्भ में डॉ भीमराव पिंगले लिखते हैं– "जहां पर भी यह लोग व्यवसाय करते हुए गांव में जाते हैं वहीं पर देवी देवताओं की स्थापना लोग करते हैं। घूमते हुए गांव के साथ देवता भी लिये जाते हैं।" [5]

बंजारा समाज में मान्यता है कि मरियामा देवी अपने बंजारे भक्तों की रक्षा करने किसी भी रूप में आ जाती ।

देवियों को प्रसन्न करने में अपना गौरव का अनुभव सकल बंजारा समाज करता है। काफी साहसी कौम होने के नाते इन्हीं देवियों की कृपा से इनकी भुजाओं में बल, पौरुष आता है ऐसा बंजारा समाज का मानना है। इनके धार्मिक जीवन में देवियों का विशेष स्थान रहा है। बंजारा समाज घुमंतू होने के नाते अपने टांडे की रक्षा के लिए देवियों को बलि के रूप में मुर्गा, बकरे की बलि देता है। बलि प्रथा का इनके धार्मिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

बंजारा लोकगीतों में तोलाजा भवानी

मारियामा भवानी की तरह ही तोलजा देवी बंजारा समाज की जीवनदायनी माता है। लोक कल्याण की भावना से तोलजा देवी की आराधना बंजारा समाज तन्मय होकर करता है। बंजारा समाज का सम्पूर्ण जीवन चक्र कर्मकांडों में उलझा हुआ है। धर्म के आस पास ही समाज का रहन सहन रहता है। धर्म के बिना इनके जीवन में कोई बस नहीं धर्म है तो इनका टांडा है। टांडा है तो समाज है। देवी पूजा इनके समाज में बहुतायत मात्रा में देखने को मिलता है। तोलना भवानी को गोहराते हुए बंजारा समाज हुमंक उठता है–

"सूतीक जागि मारी तोळजा भवानी
तोपर पांडिया हजार दोडेयाव
पचास हलकेयाव
पांडा तारी पामणीन पाणिभरा दूँ।" [6]

तोलाजा भवानी टांडे की देवी कहलाती है। यह देवी टांडे के साथ साथ चलाती है, टांडा जहाँ उजड़कर बसता है यह देवी भी वही पर बस जाती है।

देवी को पीला एवं लाल रंग फूल अत्यंत प्रिय है। तोलजा भवानी के शेर की दहाड़ से भक्त कांप उठता है। यह भक्ति उनकी गीतों में देखने को

मिलता है। बंजारा समाज बहुतायत मात्रा में अंधविश्वासी है जिसके कारण इसके हृदय में डर समाया हुआ है। यह डर उसको भक्ति की ओर अग्रसर करता है। बंजारे समाज के धार्मिक जीवन में माँ तोलसा भवानी का महत्व अधिक है।

बंजारा लोकगीतों में शीतला भवानी

बंजारा समाज शीतला भवानी पशुपालिनी है। यह समाज शीतला माता की अराधना अपने पशुओं की रक्षा के लिए करता है। बंजारा समाज पशु पालक रहा है। गाय, बैल, भैस, सुअर, मुर्गा, मुर्गी, भेड़, बकरी इत्यादि सब जानवर कुशल मंगल से रहे, बीमारी आदि से बचे रहे। इसके लिए माता शीतला की आराधना की जाती है। सीतला देवी को हर साल बकरे, सुअर की बलि दी जाती है। बंजारा समाज अपने पशुधन को लक्ष्मी का स्वरूप मानता है। यदि शीतला माता नाराज हो जाती है तो बंजारा समाज के पशु बीमार होने लगते हैं। नाना प्रकार की लाइलाज बीमारियां ग्रस लेती हैं। यदि देवी प्रसन्न है तो सभी पशु चंगे रहते हैं इतना ही नहीं बल्कि गाय अच्छे पुष्ट पुष्ट बछड़ों को जन्म देती है। इसलिए बंजारा समाज के जीवन में खुशी का माहौल हो जाता है। पशु बंजारा समाज के जीवन में खासतौर पर गाएं, बैल यह उनके परिवार के एक हिस्से के रूप में होते हैं जिस प्रकार से परिवार को किसी सदस्य को कुछ बीमारी हो जाती है तो पूरा घर चिंतित हो जाता है उसी प्रकार से बंजारे अपने पशुओं को लेकर चिंतित हो जाते हैं। इसलिए शीतला भवानी की आराधना करके चिंता मुक्त हो जाते हैं।

शीतला माता के मनोरंज के लिए उपासना के लिए बंजारा समाज गीत गाता है– *"सूतीक जागि मारी सीतला भवानी*
तोपर पांडिया हजार दोडेयाण
पचास हलकेयाव
पांडा तारी पामणीन पाणि भरा दूँ।" [7]

शीतला के स्वागत में बंजारा समाज गीत गाते हुए शीतला की सेवा सत्कार करने में लग जाता हैस उसको झूला झुलाता है पालकी पर ढ़ोता है अपने टांडा में आने के लिए घोड़ा भेजते हैं। बंजारा देवी देवताओं में शीतला माता अलग ही महत्व है। पशु पक्षियों की रक्षिणी मां शीतला बंजारा समाज को वैभव से भरने वाली है, शांति पहुंचाने वाली है।

बंजारा लोकगीतों में हिंगला भवानी

अन्य देवियों की तरह बंजारा समाज की पूजमान देवी हिंगला है। कुल देवी होने के नाते बंजारा समाज हिंगला भवानी की आराधना फुल माला बलि

देकर करता है। ऐसी मान्यता है बंजारा समाज में की देवियों को प्रसन्न करके अपने टांडे की रक्षा के लिए बहुत बड़ी जिम्मेदारी पूर्ण हो जाती है। हिंगला भवानी को प्रसन्न करने के लिए बंजारा लोकगीत प्रस्तुत है–

मेरी हिंगला चालिये फुलेडा बने न
फुलडाये वीणत न वोडलीन भरत
पगलाये पाडत वोत पडजाय मोजन रात
सोना रंग फुलेडा सोरले हेमाई
गोलाल रंग फुलेडा समेटले हेमाई। [8]

हिंमाग भवानी पहाड़ की चोटी पर अपना बसेरा बना कर रहती हैं वहीं से अपने भक्तों को आशीष वरसाती हैं हिंमाग की भक्ति में बंजारा समाज गीत गाता है।

वर गटलारी परगट माया हिंगली हडच
वोत कूकडो बोल मन डरे लागच। [9]

बंजारा समाज प्रकृति उपासक सदा से रहा है। देवियों की आराधना इन्ही प्रकृति के बीच करता है। जिसमें सूर्य चांद से लेकर पृथ्वी वन पर्वत पहाड़ की भी पूजा अर्चना करता है। हिंगला भवानी को पूजा स्वरूप त्रयवेद्य चढ़ाकर आहवाहन करते हैं कहता है कि अपनी पूजा की सामग्री हेदेवी हिंमला उठा ले।

आडेती दाडो हिंगला दाडो चडीयामो
दाडो चडीयामों चाडी पाडलो अकाडो। [10]

हिंगला भवानी बंजारा समाज की देवियों में से एक है। बंजारा समाज अपनी हारी बीमारी में इन देवियों की स्तुति करता है। प्रथा के हिसाब से धार्मिक भक्ति भावना करता चला आ रहा है।

बंजारा लोकगीतों में ओरी देवी

बंजारा समाज विविध कर्मकांडो में अझुराया अपनी जीवन लीला को जिए जा रहा है। बंजारा समाज के अंदर जितने कर्मकांड दिखाई देते हैं। उतने प्रकार के देवी देवता इनके जीवन पथ को आलोकित करते हैं। ओरी देवी की आराधना मृत्यु के समय की जाती है। काल नासनी ओरी देवी को बंजारा समाज उस समय पूजा पाठ अनुष्ठान करता है, जब इनके समाज में किसी की अकाल मृत्यु हो जाती है। ऐसी मान्यता है कि यदि किसी की अकाल मृत्यु हो जाती है तो वह भुत प्रेत बन कर भटकता है। ओरी देवी की पूजा करने से मृत आत्मा प्रेत आत्मा न बनकर मुक्त हो जाती है।

बंजारा लोकगीतों में मसाई भवानी

मसाइ भवानी बंजारा समाज की अन्नदात्री के रूप में पूजी जाती हैं। इसकी आराधना से बंजारा समाज की फसलें लहलहाती हैं घर में अन्न भंडार भरा रहता है। इसके संदर्भ में डॉ. जाधव इंदल सिंह लिखते हैं– "मसाई देवी को प्रत्येक रूप में खेत में कुएं के पास स्थापित किया जाता है। खेत में अनगढ़ पत्थर को मसाई के रूप में स्थापना करके इसको सिंदूर या कुम कुम नहीं लगाते हैं बल्कि चुना लगाया जाता है। खेतों में बीज बोते समय और खेतों से माल निकालते समय इनकी पूजा वे करते हैं। मसाई देवी भैंस पर सवारी करती हैं। कुछ लोग बकरे के साथ साथ भैंस की भी बलि देते हैं।" [11] बंजारा समाज मसाई या मंसूरी देवी की स्तुति में गीत गाता है। मसाई माता अपनी सवारी भैंस पर सवार होकर आती हैं और पूजा लेकर जाती हैं बंजारा समाज स्तुति में गीत गाता है–

"आडेती क्षतो मसूरी क्षडो चडीयायो
क्षडो चडीयायो याडी पाडले अकाडो।" [12]

बंजारा समाज की धार्मिक संस्कृति विविधताओं से भरी पड़ी है। इनके टांडे में अनगिनत देवियां पूजी जाती हैं। इन देवियों को अलग अलग काम सौंपे गए हैं। प्रत्येक देवी अपने अपने काम के हिसाब से बंजारा समाज से पूजा पाठ लेती हैं। प्रथा के अनुसार बंजारा समाज 21 देवियों की आराधना करता आ रहा है। चढ़ावा के रूप में अक्सर फुल माला के साथ बलि भी अवश्य चढ़ता है।

निष्कर्ष

बंजारा लोकगीत एवं बंजारा समाज का संबंध चोली दामन का है। कदम–कदम पर गीत बंजारा समाज के सुख–दुख के सहचर हैं। बंजारा समाज घुमंतू होने के नाते कई धर्म एवं संप्रदाय के बीच रहते हुए चला आ रहा है जिसके कारण बंजारा समाज के धार्मिक लोकगीतों में अनेक धर्मों की छाप पड़ती चली गई है। वैसे तो यह बंजारा समाज हिंदू धर्म के आसपास रहा है इसलिए इनके धार्मिक गीतों में हिंदू धर्म की छाप दिखाई देती है। मातृसत्ता का पुजारी बंजारा समाज अनेक देवी–देवताओं की आराधना करता है जिसमें माँ मारीयामा (जगदेवा) तोलजा, माँ शीतला, हिंगला, माँ गौरी, माँ कंकोडी आदि यह देवियां बंजारा समाज की टांडा की रखवाली करती हैं। बंजारा समाज साल में इन देवियों को बकरे की बलि देता है तथा नैवेद्य चढ़ाकर प्रसन्न करने का प्रयास करता है। बंजारा समाज लोकगीतों में बंजारा समाज के धार्मिक उत्सव के अवसर पर अपने देवी–देवता, संत, महात्मा की प्रशंसा में

गीत गाता है जिसमें यह दिखाई देता है कि बंजारा समाज किसी न किसी ... है। सारी बीमारी में इन्हीं देवी देवताओं की शरण में जाता है। चेचक की देवी, पशुओं की देवी, बल की देवी, धन की देवी आदि देवियों की अनेक कोटियाँ है। जिस बीमारी का प्रकोप समाज पर होता है उस देवी की आराधना होती है।

बंजारा समाज के साथ महात्मा भी हुए और अपनी भक्ति के बल पर जनकल्याण की अपील करते हैं। बंजारा समाज का टांडा इन्हीं सिद्ध पुरुषों की विचारात्मा पर चलता है। बंजारा समाज के अंदर धार्मिक डर बहुतायत मात्रा में दिखाई देता है। यही डर भक्ति की ओर धकेलता है। आस्था जब चरम पर हो जाती है तो अंधी भक्ति या रूढ़ीवादी भक्ति की ओर समाज अग्रसित होने लगता है। बंजारा समाज में भी यह व्यवस्था दिखाई देती है। हिंदू आबादी के साथ घुल–मिलकर रहने के कारण हिंदू देवी देवताओं का प्रभाव भी बंजारा समाज के जीवन को प्रभावित किए बिना नहीं रहा है। इसकी छाप बंजारा लोकगीतों में मुख्य रूप से दिखाई देती है। विभिन्न धर्मों को अपनाकर भी बंजारा समाज की धार्मिक प्रवृत्ति अपनी प्राचीन धार्मिक परंपरा को याद त्याग नहीं पाती है।

डॉ. ए. बाबू
सहायक प्रोफेसर
मो. नं. 94402 72878
adebabunaik@gmail.com

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रों.मोतीराज राठौर, गोर बंजारा जनजाति का इतिहास, पृ.सं.–68
2. डॉ. वी. रामकोटी, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ.सं.–87
3. डॉ. वी. रामकोटी, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ.सं.–84
4. डॉ भिमराव पिंगले, आदिवासी एवं उपेक्षित जन, पृ.सं.–264
5. डॉ. वी. रामकोटि, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ.सं.–89
6. डॉ. वी. रामकोटि, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ.सं.–90
7. डॉ. वी. रामकोटि, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ.सं.–90
8. डॉ. वी. रामकोटि, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ.सं.–91
9. डॉ. वी. रामकोटि, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ. सं.–93
10. डॉ. वी. रामकोटि, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ. सं.–96
11. डॉ. जाधव इंदल सिंह पृ. सं.–166
12. डॉ. वी. रामकोटि, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ. सं.–96